PART 20

पंचदशस्तरंग

Date _____

श्री ग्रन्थ मुक्तिबोध

सद्गुरु वचन चौपाई

गुरु का संशय हृदय समाता । शब्द परखकर ज्ञान है आता ।
अनुभव अपने तुम्हें बतायें । गुरुवाणी अब तुम्हें सुनायें ।
कोटि अनंत युग ऐसे बिताये । इच्छा सृष्टि की प्रभु जतायें ।
अचल पुरुष तो अति महान । बिन गुरु मिलते ना भगवान ।
कोटि नर कह नहीं पाते । जबतक ज्ञान ना गुरु बताते ।
साखी पद में कोटि वाणी । एक पुरुष को सुमरो प्राणी ।
ज्ञान सुरत व शब्द सुनाये । ऐसे जगत को प्रभु रचायें ।
सत्पुरुष से जो ध्यान लगाते । जीव वो मुक्ति सन्त की पाते ।
करते साखी पद का गान । बिरले जानते आदि नाम ।
आदि नाम का भेद है न्यारा । गुरु बिन डूबे यह जग सारा ।
सत्ज्ञान जो कोई जाने । गुप्त मत को वह पहचानें ।

साखी :- आदि नाम निज सार है, समझें पुरुष के हंस ॥
जो जाने निज नाम को, अमर होते वह वंश ॥
आदि नाम निज मन्त्र है, बाकी मन्त्र बेकार ॥
कहे कबीर निज नाम बिन, डूब मरा संसार ॥

आदि नाम को खोजो प्राणी । यदि मुक्ति हो तुमको पानी ।
मूल मन्त्र है अच्छा सबसे । लोक जाते नर जोग में जलके ।
आदि नाम जो खोजने जाते । जन्म मरण का भेद मिटाते ।
आदिनाम जो सच्चा जपता । जीव वो काल से बचता ।
आदिनाम है होता प्यारा । जपता इसको नर कोई न्यारा ।
इसी के कारण सब जग आते । जपके इसको भव तर जाते ।
गुप्त नाम गुरु बिन नहीं पाते । पूर्ण गुरु ही इसे बताते ।
सार मन्त्र जो भी पाता । विषधर भी मधुर हो जाता ।
मुक्तामणि सम आदिनाम । बचे सबसे जो करता ध्यान ।
आदिनाम निज सार कहाये । यमराज निकट ना इसके आये ।
जब तक गुप्त जाप नहीं आये । तब तक काल नहीं घबराये ।
दिये दीक्षा गुरु मुझको जबसे । गुप्त मत ले पुरुष माने तबसे ।

Date _____

मूलमंत्र जिस पुरुष के पास । उसी पुरुष को खोजले दास ।
मूलमंत्र मैंने तुम्हें सुनाया । निज अनुभव सब तुम्हें बताया ।
कहा सुना यह नहीं जाता । अक्षर से जग मुक्ति पाता ।
मूल मंत्र यह लिखा नहीं जाये । गुरु बिन मुक्ति हो नहीं पाये ।

साखी :- प्रीत बिन नहीं पाईये, मूलमंत्र यह मर्म ।
पुरुष दीप तब पाईये, जब त्यागे अभिमान ।।

चौपाई

जब तक गुरु दया ना करते । तब तक पुरुष पा नहीं सकते ।
धर्मदास मैं तुम्हें सुनाता । निर्गुण भेद कोई बिरला पाता ।
तुम तो जीव को ज्ञान बताते । यमराज यहाँ प्रपंच दिखाते ।
जीवों को माया में फँसाता । शब्द बाण से मारा जाता ।
शब्द का दिया मैं तुमको बाण । जीवों को दो तुम मुक्ति दान ।
नाम पान जो नर हैं पाते । शब्द सुत से युग हैं बन्धाते ।
युग बाँध भक्त जन्म नहीं पाये । लाख जतन यमराज दिखाये ।
तुम सबका मूल पकड़ना । शब्द सम्हार के ध्यान को करना ।
डार पत्र जो कोई धरता । बिन मूल वो जीव है तरता ।
गुप्त मत को जो भी समझता । औरों को तारे खुद भी तरता ।
गुप्त मत पाके विवेक दिखाता । शरण पुरुष की वो ही पाता ।
गुप्त मत जो प्राणी पाते । हंसराज सी काया बनाते ।
साखी पद हर कोई गाता । बिन परिचय नहीं मुक्ति पाता ।
अगम पुरुष का करके ध्यान । अब पार करो जपके नाम ।
सतमार्ग जाकर धर्म दिखाओ । सतशब्द से जीव बचाओ ।
यह पूजा है अगम अपार । खर्च करने से हो बिस्तार ।
यह धन बड़े भाग से पाते । अनेक ग्राहक इस धन को आते ।

साखी :- पूँजी यि सत्नाम की, करती सदा निहाल ।।
कहें कबीर इस माल को, चोरी करे ना काल ।।

चौपाई

निजनाम में जो जीत समाये । भक्त वह सतलोक सिधाये ।
उसी हंस का तुम लिखना लेख । अक्षर माहीं निरक्षर देख ।

धर्मदास वचन

Date _____

कहें धर्म मैं सन्त का दास । गुरु मिलाओ मेरे यम का त्रास ।
निरंजर उत्पति हमें बताये । यह ज्ञान आप कैसे पाये ।
उत्पति निअक्षर नाम बताये । आप यह ज्ञान कैसे पाये ।
कहें कबीर धर्मदास सुजान । अकह का तुमसें करूँ बखान ।
जब नहीं लोक द्वीप रचाये । सुकृत नहीं संसार बनाये ।
नहीं थी धरती अमर सुमेर । नहीं थे तब अमल कुबेर ।
तब नहीं सृष्टि जीव रचाये । आप अकह तब थे आये ।
आप तब सतशब्द सुनाये । इच्छा से प्रकाश बनाये ।
इच्छा से अनहद नाद सुनाये । सुरत सम्भार सृष्टि रचाये ।
सुरत ध्यान में आप समाये । इच्छा से ही अनुभव कराये ।
तब से अक्षर भेद महान । साखी पद में किया गुणगान ।
अकह अचल पुरुष जहाँ आप । नहीं दुख सुख नहीं सन्ताप ।
~~सबका मूल तबसे आया~~ ।
मूल यह सबका तबसे आया । बड़भागी कोई इसको पाया ।

साखी :- कहें कबीर जो शब्द जपे, करे निशदिन ध्यान ॥
कबीरा सुरत लगाय के, पाये पुरुष का धाम ॥
जिसके मन अनुराग है, पाता वही नर ज्ञान ॥
मिले ना अनुराग बिन, चाहें यत्न करो महान ॥

चौपाई

सत्य शब्द जो भी पाये । काल शीश उसको नवाये ।

साखी :- सबके सम्मुख काल खड़ा, काल नजर नहीं आय ॥
कहें कबीर सत्नाम से, यम से जीव बचाय ॥

चौपाई

नाम अमर मलयागिर सुनाता । पीकर विष अमृत बनाता ।
या मलयागिर सम सत्नाम कहाये । पीकर विष को अमृत है बनाये ।
निशदिन रहे मलयागिर संग । विष नहीं लगता उनके अंग ।

Date _____

साखी :- काल खड़ा सुख सामने, लेके तीर कमान ॥
कहे कबीर जपो नामको, छोड़ सभी अभिमान ॥

चौपाई

जर नारी जो गर्भ में ओते । नाम के बिन नरक में जाते ।
सुनो संत सतशब्द है प्यारा । जपके इसको करो उजियारा ।
जिसके मन निजनाम समाना । काल उससे है घबराता ।
धर्मदास बिनय वचन सुनाते । हाथजोड़ गुरु सम्मुख आते ।
सतगुरु कहें सुन धर्मसुजान । लेना इससे शब्द का बान ।
मैं गुरु शब्द मेरे हाथ । सब कहत नवाते इसको माथ ।

साखी :- सौभाग्य होता उसजीव का, जो रहे हम पास ॥
पुरुष संग रहे लोक में, करता सुखविलास ॥

चौपाई

जब रहते हम पुरुष के साथ । उन सम देखा नहीं कोई नाथ ।
कहे कबीर सुनो धर्मदास । मिटो संशय काल का त्रास ।
मिटादो भरम बनो निशंका । जीत के काया बजाओ डंका ।
हुआ प्रकाश गुरु भेद बताया । जीव बोध सतलोक पठाया ।

साखी :- यमराज दारुण बड़ा, वीर अति अपार ॥
सुनकर इसके नामको, मानें भय संसार ॥
नाम खड्ग राखो साथमें, करो सुर्त सम्हार ॥
काल सेजीव उबार के, भेजते भव के पार ॥

चौपाई

~~जबसे अजर पुरुष को जाना~~) ~~काल भय~~ तबसे भय
जबसे अजर पुरुष को जाना । तबसे काल भय उनसे माना ।

साखी :- ~~यम~~ यमजाल जगजीव फंसे, चलता प्रपंच काल ॥
नाम जपे पुरुष का, फंसे नहीं यम के जाल ॥
आदिनाम पुरुष का, सुन तजिये अभिमान ॥
कहें कबीर सुन धर्म, तजो नरक की खान ॥

Date

चौपाई

किससे कहूँ कहा नहीं जाये । हालत कोई समझ ना पाये ।
पुरुष दासों के हम हैं दास । अगम पुरुष रहते मेरे पास ।
यहाँ वहाँ और दोनों धाम । सत्य कबीर है मेरा नाम ।

साखी :- कोटि जन संसार में, पाते हैं नहीं निज धाम ॥
आदि नाम मुक्तिका, जाने सन्त सुजान ॥

चौपाई

गुप्त जाप है अगम अपार । जपके इसको नर उतरें पार ।
मुक्ति ना मिलती नाचे गाये । मुक्ति ना मिलती मृदंग बजाये ।
मुक्ति ना मिलती साखी बोल । मुक्ति ना मिलती तीरथ डोल ।
गुप्त जाप जो भी करता । मुक्ति पद उसको मिलता ।
दया जब सतगुरु दिखाते । हंसो को आदिनाम बताते ।

साखी :- आदि नाम संसार में, अदित अमोल अपार ॥
आदि नाम बिन मुक्ति नहीं, डूबा यह संसार ॥

चौपाई

कथा कीर्ति तुम्हें सुनाते । बिन नाम नहीं मुक्ति पाते ।
कैसे कहूँ कहा नहीं जाये । नाम जपके पुरुष मिल जाये ।
सार शब्द परवाना देते । काल से जीव बचा हम लेते ।

साखी :-

चौपाई

सोहंम शब्द निरक्षर बास । उसे अलग कर जपिये दास ।

साखी :- जो जन होते चौहरी, वो परखते माल ॥
सोहंम जापसे सतजगत, फंसता यमके जाल ॥
साखी पद संसार में, कहने सुनने का ज्ञान ॥
चिट्ठी आई पुरुष की, अब धन को लो जान ॥

Date _____

साखी:- जो जन होते जौहरी, करते मिथ्या जोग ॥
बिन सतगुरु ना मिले, भटकते सारे लोग ॥

चौपाई

जब वाणी मुख बाहर आये । भाग्य शाली सुन उसको पाये ।
कोटि जतन से जीव समझाये । बिना भाग्य से नाम ना पाये ।
~~गुरु ज्ञान लें सन्त के पास~~ ।
गुरु ज्ञान जो सन्त से पाते । काल के घर वो नहीं जाते ।
जो पुरुष को अपना माने । उसी भक्त को सच्चा माने ।

धर्मदास वचन

धर्म कहता जोड़ अपने हाथ । सुनिये विनती मेरी नाथ ।
तब साहिब बोले ऐसी बात । तुझे मुक्त कर राखूँ साथ ।
तुमको बताया नाम यह प्यारा । नाम जपो तुम अजर हमारा ।
जो भक्त कहा नहीं मेरा करते । बिन मुक्ति नरक में पड़ते ।
नाम सुन मेरा मुझको पाते । यम दूत देख उसे घबराते ।

साखी:- सबको नाम बताइये, जो आये तुम पास ॥
शब्द हमारा सत्य है, दृढ़ राखो विश्वास ॥

चौ०

~~गृहस्थो~~
घर त्याग जो वैरागी कहाते । सदा साथ में मेरे जाते ।

साखी:- मूल नाम जो जपे, शब्द का समझें सार ॥
वह साधु भटके नहीं, जाये नहीं नरक के द्वार ॥
कहें कबीर भ्रम त्याग के, पाइये सत मुक्ति धाम ॥
गुरु चरण शीश झुकाइये, त्याग निज अभिमान ॥

चौपाई

आदिनाम निरक्षर बसता । जीव इसी नाम से तरता ।
आदिनाम गुण जो भी गाते । वही सन्त प्रमाण कहाते ।

Date _____

पंथ हमारा तुम्हें चलाना । आदेश हमारा जब तक पाना ।
~~जपके नाम को मुझमें समा~~
नाम जपके मेरा मुझमें समाओ । और नाम से ना हमको पाओ ।
सन्त की निशानी आदि नाम । आप मिले तो हुई पहचान ।
उदितनाम निर्मय उजियारा । उसी नाम से जीव उबारा ।
कहें धर्मदास सतगुरु सुनलीजे । अगम पंथ को कैसे दीजे ।

सद्गुरु वचन

कहें कबीर धर्म तुम्हें सुनाते । अगम पंथ का ज्ञान बताते ।
अगम पंथ हैं अनेक विकार । उससे कभी ना होते पार ।
शब्द संग यदि जाओ ज्ञानी । फिर नहीं कोई विपदा मानी ।
जितने जीव हैं तुम्हारे दास । सभी पहुंचे पुरुष के पास ।

धर्मदास वचन

अनहद शब्द अपार कहाये । कैसे भेद तुम्हारा पायें ।

सद्गुरु वचन

आदि नाम फिर तुम्हें बताते । भेद इसका नर बिरले पाते ।
सुरत चढ़ाजो ध्यान लगाता । निजनि निजपद वोही पाता ।
सुरत बांधजो गुरु में समाते । वस्तु अगोचर वोही पाते ।
~~तब अभिमान जो मिलने आये~~ ।
शरण आये जो छोड़ गुमान । उसी को सुनाना तुम आदिनाम ।
त्यागके सब शरण जो आये । लोक बड़ाई नाहीं जिसको भाये ।
उसको देना वस्तु महान । कहें कबीर सुन हमरा नाम ।
गलत गरीबना शरण बुलाना । तन मन सन्तों पे लुटना ।
लोक लाज कुल को भुलाये । शरण पाके सब भ्रम मिटाये ।
बिन विश्वास ना भक्ति मिलती । प्रीत बिना नहीं दुविधा मिटती ।
चतुराई जो गुरु संग करता । सेवा हीन नरक में पड़ता ।
मोह त्याग जो संग ना करता । मेरे नाम से सन्त वो मरता ।

साखी :- विवेक होता शब्द से, शब्द से होता ज्ञान ॥
नाम जपे जो पुरुष का, पहुंचे पुरुष के धाम ॥

Date

चौपाई

नाम उदित जिस सन्तको भाये | काल को मार वो राख बनाये |
जो भी नर सुनता आदिनाम | नर्क ना जाये पहुंचे धाम |
आदिनाम जो नहीं सुनता | निश्चित वह नरक में पड़ता |
पुरुष बल से काल है डरता | बिना नाम काल सिर पर चढ़ता |
नाम निरक्षर जो भी पाया | काल निकट ना उसके आया |

साखी :- पारस आदिनाम है, मन है मैला लोह ॥
पारस पकड़ स्वर्ण बने, छूटे बन्धन मोह ॥

चौपाई

कहाँ तक सुनाऊं नाम की धारा | नाम जपे वो सन्त हमारा |
आदिनाम सन्त जो पाते | हंस बनकर के लोक सिधाते |

साखी :- सतगुरु मोरे शब्द बान, डोले नहीं शरीर ॥
कर मिटे सब काल के, लगता जब सुख तीर ॥
नाम फाँसी सिजीत के, जाते नहीं प्रान ॥
~~कहें अमर~~
कहें कबीर अमरजीव वो, नहीं मृतक समान ॥

चौपाई

शब्द सेजो ध्यान लगाता | बिन लगन भेद नहीं कोई पाता |
नाम का रस जो भी चखता | आवागमन दुख उसका मिटता |
अक्षर गुप्त में वही सुनाया | सत शब्द को भेद बताया |
साठ शून्य जो सुनता जान | यह गति जाने जीव महान |
पाताल शून्य है बारह खण्ड | बारह शून्य का है ब्रह्मंड |
बारह शून्य का आकाश बताते | बारह शून्य पुरुष के कहाते |
बारह शून्य का है अनुमान | कहें कबीर सेजाने ज्ञान |

साखी :- अकह मूल सब शून्य के, शून्य सकल ब्रह्मंड ॥
वहां सब जगत बसा, सात द्वीप नव खण्ड ॥

vijeta

Date _____

चौपाई

चार पदार्थ एक पंथ माहीं । बिन गुरु नर समझे नाहीं ।
तिन जीने कथा जो कहते । जीव अज्ञान भवसागर बहते ।
मिथ्या कथा में विश्वास जताते । अभय पद वो कभी ना पाते ।
असत्य कथा जो नहीं माने । तज पाखण्ड सत्य को जाने ।
जो हमारे शब्द को जाना । वही पहुँचा मेरा ठिकाना ।
नाम रस वो प्रेम से चखता । लीन सदा वो ध्यान में रहता ।
जो नर पकड़े सुर्त की डोरी । काल करे नहीं जीव की चोरी ।
होता नहीं मन जिसका अधीर । कहें कबीर सो सत्य फकीर ।
सत्य जान जो असत्य भुलाते । भव पार वही नर जाते ।
गुरु भक्त जिसे अपना बनाते । नाम नीति हंस को बतलाते ।
गुरु नाम जो हृदय बसाते । भक्ति भेद वही नर पाते ।
जब तक भक्ति अंग नहीं आये । सार शब्द कोई कैसे पाये ।
~~सत्य नाम जो हृदय बसाता~~ । ज्यों बालक पाले कोई माता ।
सत्य नाम जो हृदय बसाता । बालक पाले ज्यों कोई माता ।
गुरु ध्यान जो भक्त लगाते । मुक्ति धाम भक्त वो पाते ।

साखी :- सुर्त समाये नाम में, जग में रहे उदास ॥
कहें कबीर निज नाम में, दृढ़ राखे विश्वास ॥

चौपाई

विश्वास नहीं जिसको आवे । भक्ति अंग वो कैसे पावे ।
सुर्त लगा जो निशदिन जागे । मुक्ति में फिर देरना लागे ।
मन निशंक सदा उसका रहता । कपट काल के वो ना सहता ।
~~जीवको काल खायेना~~
जो भी लगन माया से लगाते । काल के मुख सभी समाते ।
~~सबको समाधीकर~~
जो सन्त सदा करते ध्यान । जीव ले उससे बीरा पान ।

साखी :- गुरु के शब्द साधु की तप, जो लेता है जान ॥
कहें कबीर वह बढ़े सदा, ना हो नुकसान ॥

Date _____

चौपाई

जब तक सार शब्द नहीं आवे । तब तक प्राणि मुक्ति ना पावे ।
सार नाम बिन सीपके मोती । उपजे बहुत बिना हल खेती ।

साखी :- मूल मेरा नाम है, जपते सन्त सुजान ॥
सन्त से नाम पाइये, भुलासकल अभिमान ॥

चौपाई

आदि नाम जो सन्त ना जपता । यम प्राण उसके हरता ।
आदि नाम है अक्षर मांहीं । गुरु बिन नरक छूटे नाहीं ।
सोहम में निरक्षर बसता । गुरु बिन कौन उसको कहता ।
जान जिसे विश्वास है आता । लोक वेद की छूटे आसा ।
जान आदि निअक्षर वानी । छूटे भर्म होय ब्रह्मज्ञानी ।
कहें कबीर वो सन्त धनवान । जो करता निरंतर ध्यान ।
नाम जपो मैं कहूँ पुकार । ना तो डूबो राह मझधार ।
कहूँ शब्द नर उसको ध्याना । आदि नाम बिन ना मुक्ति पाना ।
मैं सुनाता तुमको गुरु संदेश । नाम जपकर पहुँचो देश ।
गुरु शब्द जो नहीं जपते । भव सागर नहीं वो तरते ।

साखी :- माया में फांसे काल दुष्ट, सबको कहूँ पुकार ॥
माया जाल सब काटिये, जपके नाम अपार ॥

चौपाई

गुरु पर करते जो विश्वास । निश्चित जाते पुरुष के पास ॥
करो यकीन सब संसार । गुरु शब्द मैं कहूँ पुकार ।
मिलते गुरु ना जिनको आस । गुरु मिलन से होय विश्वास ।
निशदिन जपता जो भी नाम । जाने वही भजन परवान ।
परमारथ हेतू सबको बताता । पाखण्डी नर को काल सताता ।
अक्षर आदि निज नाम सुनाऊँ । जन्म मरण के भेद मिटाऊँ ।
सोहम के संग आये संसार । मझको बताये गुरु उपचार ।
भेद इसका जिसने पाया । वो साधु जग नहीं आया ।

Date _____

साखी :- अवसर यह फिर ना मिले, पल में करूँ भव पार ॥
भव सागर तर जायेंगे, होगा जीव उद्धार ॥

चौपाई

गुप्त मत नर जो भी पाता । घर त्याग वैरागी कहाता ।
अकह वस्तु जो सम्मुख पाता । पाखण्ड अपने सभी मिटाता ।
अजर पुरुष को खोजो प्रानी । कहे कबीर सुन सन्त की वानी ।
आदिनाम से खोजो ध्यान लगाता । निर्भय मुक्ति अमर पद पाता ।
गुरु शब्द जो हृदय रखते । सन्त वही भवसागर तरते ।
मन कारण नर धोखा खाते । इसकारण वो सुख नहीं पाते ।
शब्द ध्यान हम बतात तुमको । फिर नहीं दोष लगाना हमको ।
आदि नाम जो अमृत चखता । काल को वश अपने रखता ।

साखी :- प्रेम पन्थ जो चलें, अजाते पुरुष के धाम ॥
जन्म उनका व्यर्थ है, जिनके मन मोह काम ॥

चौपाई

तन मन धन सन्त भुलाते । सन्त वही पुरुष लोक सिधाते ।
पुरुष नाम सन्त जो रटता । उसको भक्त मैं अपना कहता ।
सत्लोक में वह करता बास । अजर पुरुष जहाँ अजर प्रकाश ।
अनेक जीव पार ना इसका पाते । इन सम गुरु कौन कहात ।
हम तुम नारी पुरुष सब माहीं । जहाँ है सोहम वहाँ हम नाहीं ।
इनका ध्यान जीव सभी लगाते । तन धर कर पुरुष ना आते ।
अकह अमान पुरुष है न्यारा । नाम निःअक्षर उसका प्यारा ।
सुमिरन जो भी इसका करता । सोर जगत को वश में करता ।
~~नाम रस~~
नाम का रस अधिक सुहाये । यम त्रास जीव के सब मिटाये ।

साखी :- पाँच पच्चीस तीन गुण, इक है सबका धाम ॥
तन मन धन को बारके, जपलो आदि नाम ॥
धन परखे धनवन्त कोई, जो पाये दृष्टि ज्ञान ॥
अंधे को पंथ ना मिले, चाहे करे कण्ठ महान ॥

Date

चौपाई

कहे कबीर भरम मिटाओ । मुक्ति साची सोर पाओ ।
कहूँ ज्ञान कुछ नहीं छिपाता । बिन गुरु जीव कुछ ना पाता ।
कोई कहे चोद अन्त कहानी । गुरु बिन मुक्ति ना पाते प्रानी ।
शब्द स्वरूप हम बन आये । हमीं जग कडिहार कहाये ।
हममें ही सतशब्द समाया । सन्त स्वरूप बन मैं ही आया ।

साखी :- ज्ञान दीपक सुरति की बाती, दिये सन्त के हाथ ॥
दीपक सभी जलाईये, निसदिन सतगुरु साथ ॥
ज्ञान दीपक प्रकाश से, भीतर भवन उजियार ॥
पुरुष ध्यान वहाँ कीजिये, सहज होय उद्धार ॥

चौपाई

जो भक्त हो सबसे सच्चा । बने अमर मिले पद अच्छा ।
यदि तिथि भजन जो भी करता । आवा गमन उसका मिटता ।
लोक वेद कर्म भरम नशाये । बने सुदृष्टि ज्ञान को पाये ।
कहना मेरा यह जग माने । सत्य पुरुष को वो पहचाने ।
कहें कबीर तन का जलाओ । पाँच तत्व गुण तीन मिटाओ ।
नाम बिन जग श्वान समान । करो जतन ना मिले निदान ।

साखी :- कहें कबीर जग मुआ, पिये विष की धार ॥
जो जीव सतगुरु करे, होता भव से पार ॥

चौपाई

बिरले जन ही भक्ति पाते । स्थिर नर ही भक्त कहाते ।
आप पुरुष और सब हैं नारी । सेवक इनके सकल तनधारी ।
अचल अमान जो अकह कहते । गति इनकी नर बिरले पाते ।
आदि पुरुष को बिरला पाते । ब्रह्मा विष्णु शिव पार ना पाते ।

साखी :- अमृत काया पुरुष की, करूँ मैं इसका गुणगान ॥
गुरु दया से पुरुष मिले, करो निरंतर तुम ध्यान ॥

vijeta

Date

चौपाई

निःअक्षर निर्गुण जो भी जाने । जग के गुण और ना मानें ।
त्रिगुण महिमा सगुण बोले । निर्गुण ना इनसे डोले ।
आदि नाम सब जग को बांधे । आदिनाम धर तप को साधे ।
आदि नाम से अक्षर धारा । आदि नाम जपे जग सारा ।
सभी देवों को निर्माता नाम । सभी जीवों को बनाता नाम ।
साखी पद सबसत्य बताते । आदि नाम का मूल सुनाते ।
मूल मंत्र जिसने भी पाया । आवागमन उसने मिटाया ।
मूरख लोग कहे मैंने पाया । मूल मंत्र बिन जन्म गवाँया ।
प्रेम अभागे मूल ना जाने । डार पत्र में पुरुष बखाने ।

साखी :- अचर पुरुष एक है, अजर द्वीप स्थान ।।
कहें कबीर सर्वज्ञानको, उस पुरुष को जान ।।

चौपाई

निःअक्षर को जो ना पाता । प्राण स्थिर ना अपने बनाता
गुरु संग प्रीत जो ना लगाता । प्रेत योनि वो प्राणी पाता ।
सत् शब्द से तन अमृत पाये । जाति पाति कुल धर्म मिटाये ।
आदि नाम है जग से न्यारा । जो पाये सो बने हमारा ।
जाति कुल से नाता तोडो । संत साधु से नाता जोड़ो ।
पाखण्ड छोड़ बैरागी बनना । अपने पिया के आंगन बसना/रहना ।

साखी काल नहीं कुछ कर सके, पुरुष नाम रहे जो पास ।।
निर्गुण निंदक भव डूबते, ना करें गुरु विश्वास ।।

चौपाई

नाम पुरुष का जो भी बताये । उसी को अपना गुरु बनाये ।
~~महिमा उसकी अगम अपार~~ । लोक वेद त्याग
महिमा उसकी अगम अपार । बनो हंस त्याग लोक ससार ।
अचल पुरुष का अचल है देश । आदि नाम से को प्रवेश ।
मिट जाते वहाँ सब दुख द्वंद । सुख सागर वहां प्रेम आनन्द ।
सुगुण सगुण दोऊ झगड़ा करते । पुरुष नाम दल दोऊ जपते ।
मूल भक्ति का कबीर सुनाते । अकह अमान की महिमा गाते ।

Date

अवरण वरण का भेद है न्यारा । घट घट बसे नाम ये प्यारा ।
उसी पुरुष को जानो प्राणी । महिमा जिसकी हमने बखानी ।
घट सबके वो ही बसते । किस कारण वो ऐसा करते ।
बिन कपट वो करें भलाई । सन्तों को वे हैं सुखदाई ।
हमारे अनुभव की यह बानी । जो खोजे वो पावे प्रानी ।
देख परख तुम करना आशा । अगुण सगुण का सभी तमाशा ।
सत्य शब्द हम दिये सन्देश । फिर ना जाओ काल के देश ।
सत्य संदेश गुरु हमें सुनाये । भले जीव को इसे बताये ।
कहे कबीर वस्तु यह अपार । इस वस्तु संग उतरो पार ।
मूल मंत्र सब कष्ट से पाते । अगम अगोचर समझ तब आते ।
मूल मंत्र जो जीव ना पाता । काल भयंकर उसको खाता ।
भला मानुष यदि तुम पाना । भेद तभी तुम उसे बताना ।

साखी :- ~~[illegible]~~,
बिन जाने जो भेद कहे, गुरु वो मूर्ख समान ॥
बलहारी उस सन्त की, परख के देता जो ज्ञान ।

चौपाई

~~तन अभीमा~~।
तन अभिमान जो जीव दिखाते । मूल मंत्र को वह नहीं पाते ।
बने ना दास करे अभिमान । देना नहीं उसे अनुभव ज्ञान ।
~~सन्त भला~~
सन्त का हित जो नहीं करते । मुक्ति बिन भटकते फिरते ।
कहें कबीर पुरुष बलिहार । अनुभव अपना मैं कहूँ पुकार ।

साखी :- समझाये पर समझें नहीं, करें बहुत अभिमान ॥
गुरु शब्द नहीं वो मानते, कहें हमको सारा ज्ञान ॥

चौपाई

~~[illegible]~~ बताया अनुभव तुमको सारा । आदि नाम बिन घट अँधियारा ।
पुरुष बिन सब भटके फिरते । निश्चित वो नरक में पड़ते ।
एक नाम बिन पार ना पाये । मिथ्या प्राणी जन्म गँवाये ।

Date

साधु हृदय जिसका पाते । उसके घट में पुरुष समाते ।
भरे बर्तन में ना नीर समाये । काल की माया सबको भाये ।
समझे वही जो अनुभव करता । और सबको झूठ समझता ।
हर्ष शोक दोनों को त्यागे । होके मगन गुरु पद लागे ।
अजर अमर वो अकह कहाते । जो समझे वो सन्त कहाते ।

साखी:- ~~गुरु पुंजी सत्नाम है, पाये वही जो धनवान ।~~
~~नित दिन खर्चो इसे सभी,~~

गुरु पुंजी सत्नाम की, बड़े भाग से पाय ॥
कहें कबीर आये ना टोटा, नित खर्चे और खाय ॥

चौपाई

यूँ नहीं मिलता अमर प्रकाश । जो खोजे होता उसके पास ।
बड़े भाग से यह धन मिलता । तभी सन्त वैरागी बनता ।
सत्य नाम को प्राणी जानो । और सबको सपना मानो ।
आदिनाम संग करके ध्यान । तभी बनोगे तुम सन्त महान ।
बारह राशी मन्त्र चौबीस । यह सब सपने के ईश ।
बिन जाने जो निन्दा करते । निश्चित वह नरक में पड़ते ।
~~[illegible]~~ शब्द को जो ना करें विचार । काल के बनते वो आहार ।
~~सब नामबिन~~
नाम बिन नहीं मुक्ति पाते । नाम बिन नर गोते खाते ।
निंदक नरक पड़े नहीं वो तरते । चौरासी योनि भटके फिरते ।
तनधारी जो ना ध्यान लगाते । आवागमन अपने नहीं मिटाते ।

साखी:- भरम जाल संसार है, सब उलझे भव भीत ॥
मन मीत कोई एक है, मन में राखो प्रीत ॥
चरणामृत जो पायके, दृढ़ राखे विश्वास ॥
निर्भय मुक्ति पाइये, करो पुहुप निवास ॥

चौपाई

सुर्त दीप की कठिन कहानी । अगम अगोचर अनुभव वानी ।
अकह सुर्त जहाँ अगम अपार । जपके नाम उतरो पार ।

Date _____

~~तजे पाखण्ड जो अभिमानी~~ ।
तजे पाखण्ड जो निर्वानी । वो सन्त कहलाया ज्ञानी ।

साखी :- पुरुष सार अति अपार हैं, सब जीवों के मीत ॥
ज्ञान से भव वो तरें, जो जन प्रेम पुनीत ॥
कहें कबीर पुकार के, निशदिन करिये जाप ॥
भव सागर भक्त तरें, बाकी करें सन्ताप ॥
चिट्ठी आई लोक से, शीश चढ़ा तब बैरोग ।
नाम जप पुरुष पाइये, गुरु मिले बड़े भाग ।

चौपाई

पाकर शब्द मगन मन रहता । आये ना लाज जग जो भी कहता ।
होके निशंक ना मन भटकाये । करके ध्यान पुरुष को पाये ।
अकह अमान पुरुष हैं न्यारे । पुरुष ना बने तन के धारे ।
मूल वस्तु बड़भागी पाता । साखी पद में यही सुनाता ।
अकह कथा कही ना जाये । गुरु दया से ध्यान लगाये ।
साखी पद काम यहाँ ना आये । कोटि शेष भी कह ना पाये ।
अनुभव शब्द जहाँ है बसता । वर्णन उसका हो नहीं सकता ।
देख परख विश्वास है आता । आवागमन तभी मिट पाता ।
जहाँ नहीं होता दूजा भाव । पाओ पुरुष मिटाकर आप ।
वहाँ बैठ अमृत फल पाना । दुविधाएँ अपनी सभी मिटाना ।
हृदय अपने गुरु शब्द बसाना । अभय पद मुक्ति का पाना ।
कोटि असुर के राजा आवें । दृढ़ विश्वास कर सन्त कहावें ।
कहें कबीर है शब्द सुहेला । गुरु पूरा तो सूरा चेला ।

साखी :- गुरु पूरा शिष्य सूरा, हृदय राखो आदि नाम ॥
सन्त सुकृत को जान के, पाओ पद निर्वान ॥

मुक्ति बोध समाप्त

vijeta